नवम्बर-२०१२

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

दूसरों की भूल निकालने की बुरी आदत

दादाजी कहते हैं...

दादाश्री : कोई तुम्हारी भूल निकालता है या नहीं निकालता?

प्रश्नकर्ता : निकालता है।

दादाश्री : उस समय तुम उसकी भूल निकालते हो या नहीं निकालते?

प्रश्नकर्ता : हाँ, निकालता हूँ।

दादाश्री : हाँ, यही मैं कहता हूँ। भूल नहीं निकालनी चाहिए। भूल निकालने से क्या फ़ायदा?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कुछ समझाइए कि भूल क्यों नहीं निकालनी चाहिए?

दादाश्री : नहीं, भूल नहीं निकालनी चाहिए। भूल होगी कहीं? कोई मित्र हो और उसकी भूल निकालें तो मित्रता टूट जाती है। बगैर भूलवाला कोई नहीं होता। किसी की भूल निकालना तो मूर्ख का काम है।

प्रश्नकर्ता : एक बार भूल करता है तो माफ़ कर देता हूँ, लेकिन जब वह दूसरी बार वही भूल करे, तब गुस्सा आ जाता है।

दादाश्री : भूल वह करता है और तुम क्यों

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते हैं... १
यह तो नयी ही बात है! २
भूल निकालने के अलावा... ४
हमारा एक टेढ़, आपके तो अठारह टेढ़ ७
चलो खेलें..... १०
ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ १२
अपने आपका परीक्षण करके देखो! १४
मीठी यादें १५
पूज्यश्री के साथ बच्चे १६

कमज़ोर पड़ जाते हों?

प्रश्नकर्ता : उसकी भूल के कारण हम सबको सहन करना पड़ता है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन तुम कमज़ोर क्यों पड़ते हो? हमें गुस्सा नहीं आना चाहिए। इससे उसके मन में भय लगेगा कि देखो ये बोलते ही नहीं। कितने अच्छे आदमी हैं!

प्रश्नकर्ता : लेकिन भूल निकालने से उसे दुःख क्यों होगा?

दादाश्री : दुःख तो होगा ही न, भूल निकाली मतलब दुःख होगा ही। भूल निकालनी ही नहीं है। यह उसका अपमान करने के बराबर है। यह तो उसके प्रति बैर है एक तरह का।

प्रश्नकर्ता : उसकी भूल निकालने पर उसे बुरा नहीं लगे तो भूल निकालनी चाहिए या नहीं?

दादाश्री : बुरा तो लगेगा ही। फिर वो भी मन में सोचेगा कि मैं इनकी भूल कब निकालूँ! किसी की भी भूल दिखे, वही अपनी भूल है। उसकी भूल उसे देखनी है। हमें किसी की भूल निकालने का क्या अधिकार है? यह तो बिना काम के न्यायाधीश बन जाते हैं! ऐसा नहीं होना चाहिए। अपनी लाइफ सुंदर होनी चाहिए।

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ७
अखंड क्रमांक : ७
नवम्बर-२०१२

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९

राजकोट त्रिमंदिर : ९२४१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by : Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५५० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दूसरों की भूल निकालने की बुरी आदत

अ क्र म ए क्स प्रे स

संपादकीय

बालमित्रो,

दूसरों की भूल निकालना बहुत ही बुरी आदत मानी जाती है। लेकिन हम सब में यह इतना सहज हो गया है कि, मालूम होते हुए भी हम भूल कर बैठते हैं। खास तो जब हमारी इच्छा अनुसार काम न हो, तब। कोई हमारी भूल निकाले तो हम बिल्कुल भी सहन नहीं कर सकते, फिर भी दूसरों की भूल निकालने में हमें ज़रा भी संकोच नहीं होता। यह कैसा आश्चर्य है!

अब भूल निकालने से सामनेवाले पर कैसा असर होता है और इसके क्या परिणाम आते हैं, उसकी सुंदर समझ परम पूज्य दादाश्री ने इस अंक में दी है।

तो आओ, हम इस समझ के द्वारा ऐसी बुरी आदत से बचें।

-डिम्पल मेहता

यदि हमारे भूल निकालने पर सामनेवाला उपकार माने कि 'अच्छा हुआ मुझे बताया। मुझे तो मालूम ही नहीं था, आपका उपकार मानता हूँ।' तभी भूल निकालनी चाहिए।
यह तो नयी ही बात
यह तो नयी ही बात
यह तो
जिस भूल का सामनेवाले को एहसास हो, वैसी भूल कभी भी नहीं निकालनी चाहिए । जैसे कि, 'मेहनत नहीं करने से, मैं परीक्षा में फेल हुआ हूँ।' जिसे ऐसा अफ़सोस है उसे, 'तू फेल हो गया' ऐसे डाँटना नहीं चाहिए।
यह तो नयी ही बात
FAIL

भूल स्वीकार करने से बड़े मनवाले बनते हैं। जैसे कि, जब पड़ोसी कहे कि तुम बहुत शरारती हो, शरारत ज़रा कम करो, तब सामने बोलने के बजाय उसे मान लोगे, तो बड़े मन के बनोगे।
नयी ही बात!
यह तो नयी ही बात
यह तो नयी ही बात
जहाँ प्रेम होता है, वहाँ भूल नहीं निकाली जाती। जैसे कि, तुम्हारा मन पसंद गेम तुम्हारे मित्र से खो जाए, फिर भी तुम उसे बिल्कुल भी नहीं डाँटोगे।

भूल निकालने के अलावा...

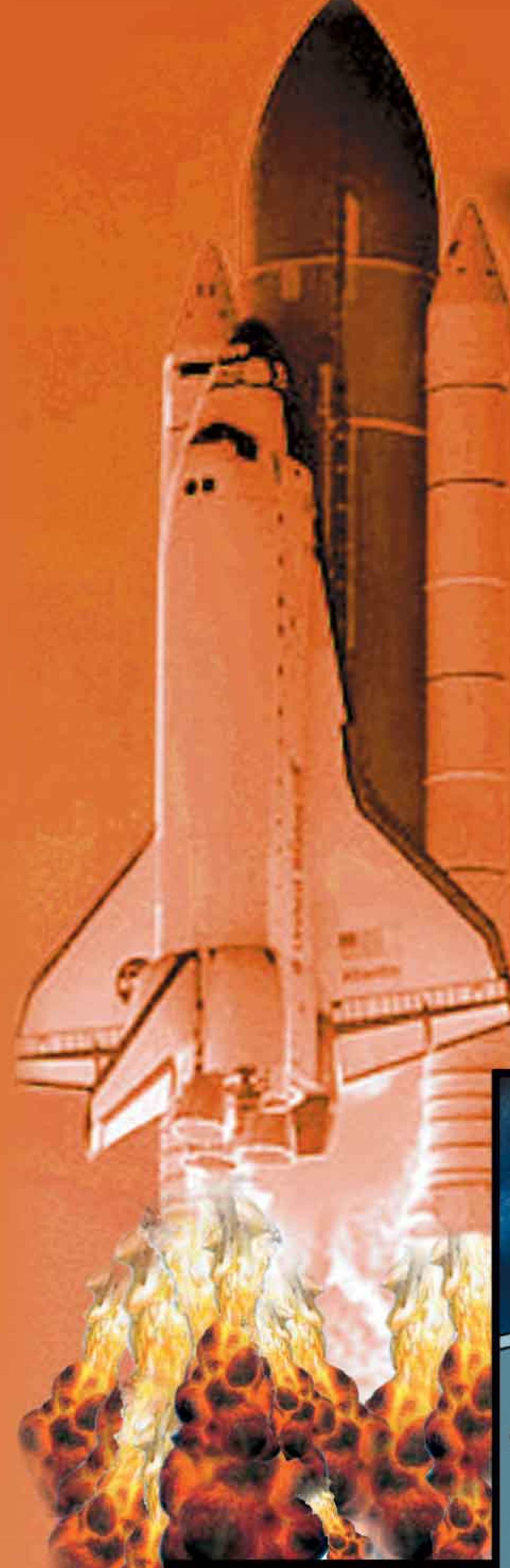

सात बजने में पाँच मिनट बाकी थे। ठीक सात बजे स्पेसशिप लॉन्च करना था। काउन्ट-डाउन शुरू हो गया था। अचानक कम्प्यूटर स्क्रीन पर एक एरर डिस्प्ले हुई। कम्प्यूटर की गिनती के अनुसार स्पेसशिप की एक कंट्रोल मशीन में कुछ खराबी थी इसलिए कम्प्यूटर स्पेसशिप लॉन्च रोकने की सूचना दे रहा था।

अनुराग एक वर्ष से इस स्पेसशिप को लॉन्च करने के लिए काम कर रहा था। उसने और उसकी टीम ने इस मिशन को सफल बनाने के लिए दिन-रात एक किए थे। कम्प्यूटर पर एरर देखकर उसे उलझन हुई। उसने सोचकर फिर प्रोफेसर मुखर्जी, जो कंपनी के डिरेक्टर थे, उन्हें जानकारी दी, "सर कोई प्रोब्लेम नहीं आएगी। हम स्पेसशिप को लॉन्च होने देते हैं। मैंने और मेरी टीम ने सब तरह से सोचकर देख लिया है।"

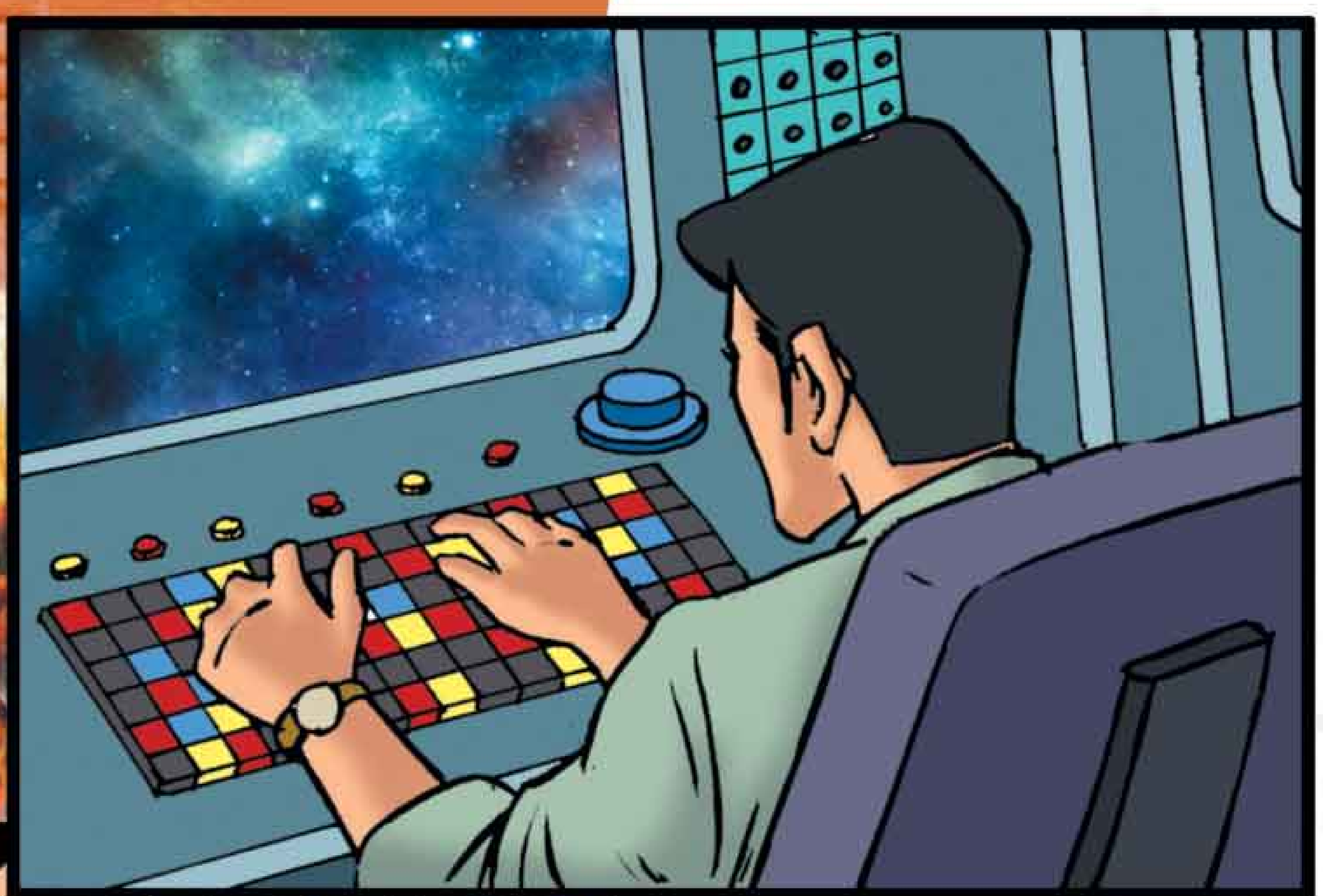

स्पेसशिप लॉन्च होने के कुछ मिनट बाद कंट्रोल मशीन फेल हो गई और स्पेसशिप समुद्र में गिर गया। पूरी टीम को बहुत आघात लगा। अनुराग तो बहुत ही निराश हो गया था।

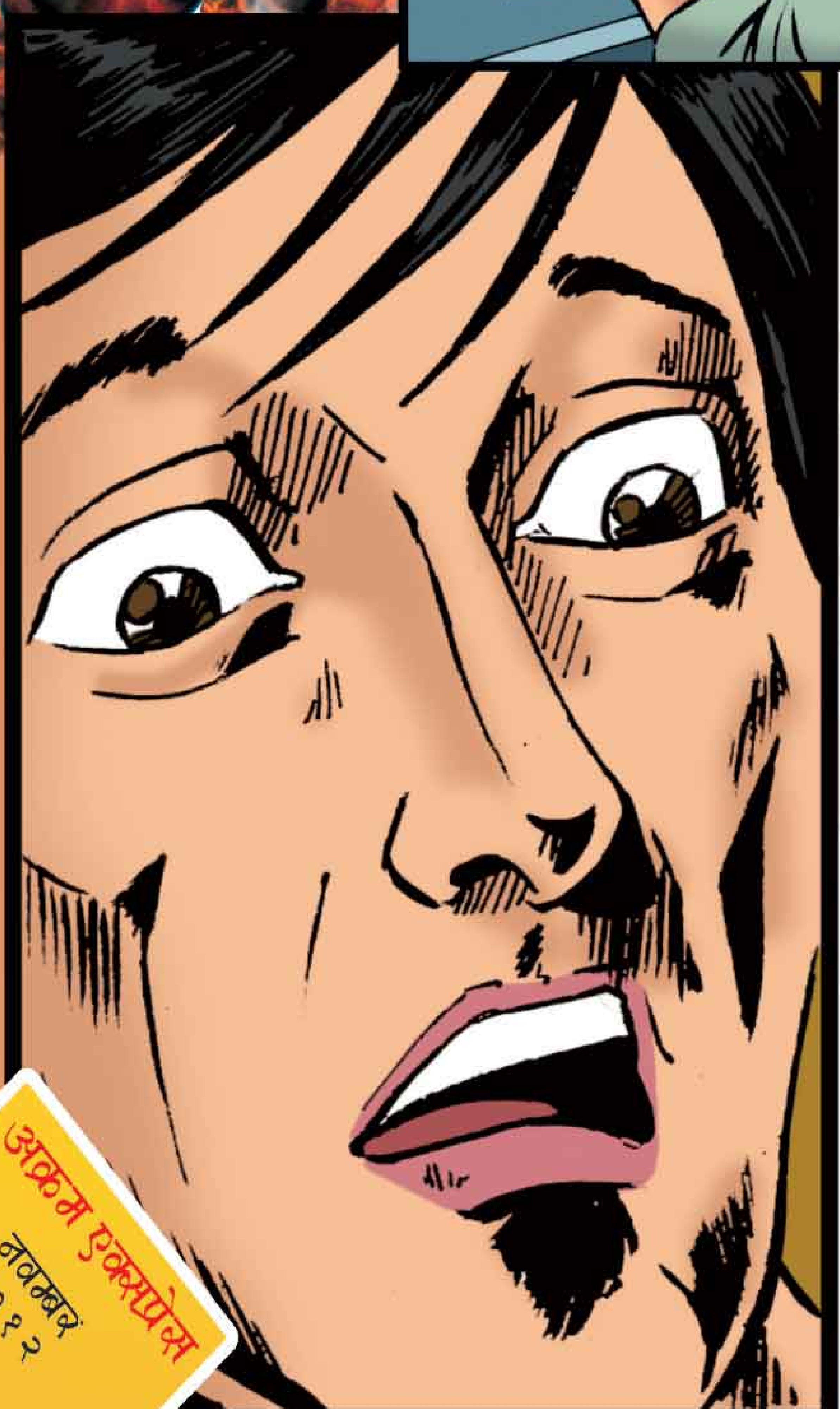

"मुझसे कितनी बड़ी भूल हो गई! कैसा गलत डिसिज़न लिया! मुझ पर से प्रोफेसर मुखर्जी का विश्वास उठ जाएगा।"

तभी फोन की घंटी बजी। प्रेस कॉन्फरन्स शुरू होने में दस मिनट बाकी थे। प्रोफेसर मुखर्जी और अनुराग की टीम कॉन्फरन्स रूम में पहुँचे। बहुत भारी मन से अनुराग वहाँ पहुँचा। दोष की टोकरी सिर पर लेने के लिए वह अपने आपको तैयार कर रहा था।

तभी प्रोफेसर मुखर्जी ने माइक अपने हाथ में लिया और प्रेस को संबोधित करते हुए कहा, "इस बार हम असफल हो गए हैं। हमारी टीम ने बहुत मेहनत की थी, लेकिन अगले साल हमें ज़रूर सफलता मिलेगी। इस वर्ष के दौरान, मैं अपनी टीम को सभी ज़रूरी नई टेक्नॉलोजी दूँगा।" इस तरह प्रेस के सभी प्रश्नों के जवाब प्रोफेसर मुखर्जी ने दिए और कंपनी के डायरेक्टर होने के कारण मिशन की असफलता की ज़िम्मेदारी अपने सिर पर ले ली।

प्रेस कॉन्फरन्स के बाद प्रो. मुखर्जी ने अनुराग की टीम के

साथ मीटिंग रखी। अगले साल यह मिशन किस तरह से सफल बनाना है उसकी चर्चा प्रोफेसर ने उसमें की। मीटिंग करीबन तीन घंटे चली। पूरी मीटिंग के दौरान एक बार भी प्रोफेसर ने मिशन फेल्यर के लिए किसी की भूल नहीं निकाली। अब इसके बाद काम कैसे सुधरे उसके लिए ही सोच-विचार करते रहे। अनुराग को प्रोफेसर के इस व्यवहार से बहुत आश्चर्य हुआ!

मीटिंग पूरी होने के बाद अनुराग ने प्रोफेसर से पूछा, "सर, एक प्रश्न पूछूँ?"

"ज़रूर" प्रोफेसर ने कहा।

"सर, मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है कि, मैंने इतना गलत डिसिज़न लिया, फिर भी आपने मुझे कुछ भी नहीं कहा। मैं आपकी जगह होता तो अभी तक मैंने एक-दो को डाँट दिया होता और मिशन फेल्यर की ज़िम्मेदारी किसी के सिर पर डाल दी होती।" अनुराग ने कहा।

चेहरे पर निर्मल स्मित के साथ प्रोफेसर बोले, "यह भी एक खूब मज़े की बात है। मैं करीब पाँच वर्ष का था, एक दिन घर में, मैं और मेरी बड़ी दीदी अकेले थे। मुझे दूध पीने का मन हुआ। इसलिए फ्रीज़ खोलकर मैं दूध की बोतल निकालने गया। तभी बोतल मेरे हाथ से छूटकर नीचे गिर गई। रसोई में दूध की नदी बहने लगी।

जब दीदी रसोई में आईं, तब मुझ पर थोड़ा भी गुस्सा किए बिना एकदम प्रेम से हँसते-हँसते बोली, "अरे, छोटू! ऐसी दूध की नदी तो मैंने पहली बार देखी! दूध तो ढुल ही गया है, तो अब तुझे दूध में छपछपाना है?" थोड़ी देर मैं उसमें खेला। फिर बहन ने कहा, "छोटू, तुझे तो मालूम है न कि हमारे से ऐसी गंदगी हो जाए तो हमें ही साफ करनी चाहिए। तो अब तू बता कैसे साफ करेंगे? स्पंज से या पोंछे से?" मैंने स्पंज हाथ में ले लिया और सारा साफ किया।

फिर दीदी ने खूब प्रेम से मुझसे कहा, "तुझे मालूम है, कि यह बोतल तेरे हाथ से छूट गई वह एक निष्फल प्रयोग कहलाएगा। दूध की बोतल दो छोटे-छोटे हाथ से कैसे उठानी है उसका निष्फल प्रयोग हुआ। हम बाहर जाते हैं और एक बोतल में पानी भरकर देखते हैं कि क्या तू कोई ऐसी तरकीब ढूँढ सकता है कि बोतल को किस तरह पकड़ना है, ताकि वह हाथ से छूट न जाए?"

और उस दिन मैंने समझ लिया कि "यदि मैं बोतल को ऊपर से उसके ढक्कन के पास से पकडूँ तो मेरे हाथ से नहीं गिरेगी।"

फिर प्रोफेसर आगे बोले, "मेरी भूल के लिए दीदी ने मुझे डाँटा नहीं, बल्कि प्रेम से सही तरीका सिखाया। यह बात मुझे अंदर तक छू

गई। अगर दीदी ने मुझ पर गुस्सा किया होता, तो मेरी हिम्मत टूट जाती और मैं हमेशा के लिए कुछ नया करने से घबराता। मुझमें उनके प्रति नेगेटिविटी भी हो गई होती। लेकिन आज मैं असफलता से नहीं घबराता और बार-बार प्रयत्न करने से भी नहीं घबराता। आज मैं तुम्हारे साथ भी यही कर रहा हूँ। जो मेरी दीदी ने मेरे साथ किया था।" यह बात सुनकर, रूम में बैठे हुए सभी लोग बहुत प्रभावित हुए।

और सचमुच दूसरे साल स्पेसशिप लॉन्चिंग मिशन सफल रहा। सभी खूब उत्साह में थे। प्रेस कॉन्फरन्स का आयोजन हुआ। प्रोफेसर ने अनुराग को स्टेज पर बुलाया और प्रेस के साथ बात करने का निमंत्रण दिया। यह सुनकर अनुराग को प्रोफेसर मुखर्जी के प्रति बहुत आदरभाव उत्पन्न हुआ। मन में विचार आया, "प्रोफेसर मुखर्जी एक महान लीडर हैं। निष्फलता अपने सिर पर ले ली थी और सफलता के समय टीम को आगे कर दिया।"

स्टेज पर आकर, माइक हाथ में लेकर अनुराग बोला, "इस सफलता के सच्चे अधिकारी प्रोफेसर मुखर्जी हैं। उनके पॉज़िटिव दृष्टिकोण के कारण ही यह मिशन सफल हुआ है। जब पिछले साल यह मिशन फेल हुआ था, तब हमारी एक भी भूल निकाले बिना, वे हमें सिर्फ काम सुधारने के लिए प्रोत्साहन और हिम्मत देते रहे। इसके कारण टीम में भी सभी एक दूसरे पर आक्षेप किए बिना मिशन को सफल बनाने के काम में लग गए थे। प्रोफेसर मुखर्जी के कारण ही आज हम यह दिन देख रहे हैं।"

यह सुनकर पूरा कॉन्फरन्स हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

हमारा एक टेढ़ा, आपके तो अठारह टेढ़े
एक दिन ऊँट भाई ताज़ी हवा में व्यायाम करने लगे। तभी बंदर ने पेड़ पर छलांगें मारनी शुरू कर दीं।
अरे बंदर, यह तू क्या पूरे दिन उछल-कूद करता रहता है? लाइफ में थोड़ा सीरियस बन।
आप अपना व्यायाम करो। मैं मेरा व्यायाम कर रहा हूँ।
शरारती । कुछ आता तो है नहीं, बस पूरे दिन धमाल, धमाल और धमाल!
बंदर से परेशान होकर ऊँट आगे चलने लगा। वहाँ उसे सियार, बगुला और खरगोश दिखे। वे किसी काम में मग्न थे।
एय सियार! क्या कर रहा है?
क्या कहा?
बहरा है? इतने लंबे कान हैं, मगर सुनाई तो देता नहीं है।
देखता नहीं, मैं नाव बना रहा हूँ।
नाव किसलिए?
नदी के उस पार एक हरा-भरा जंगल है। वहाँ जाने के लिए नाव बना रहे हैं।

मैं भी आपकी मदद करता हूँ। मुझे भी साथ में ले जाओ न!
नाव बनाते हुए।
एय बगुले, तेरी टेढ़ी गर्दन की तरह तेरी नज़र भी टेढ़ी ही है। सीधा बाँधना नहीं आता? मुझे करने दे।
बगुले को दुःख हुआ, लेकिन वह कुछ बोला नहीं। नाव बन गई इसलिए बगुला, खरगोश, सियार और ऊँट नाव में बैठकर नदी के उस पार जाने के लिए निकल पड़े।
पतवार चलाते-चलाते....
मैंने सुना है कि इस जंगल में तरह-तरह के फल-फूल हैं। तोता कहता था कि वहाँ रसदार खजूर हैं।
खजूर? मतलब क्या?
लो, इतना भी नहीं मालूम? तू तो मूर्खों का सरदार ही है। तेरी यह आधी ज़िंदगी बेकार गई।
अक्रम एक्सप्रेस
नवम्बर २०१२
८

तभी नाव में कुछ कडडडडड आवाज़ आई,
ऊँट भाई, आप तो बहुत होशियार हो। सबकुछ सीख लिया है। तैरना तो सीखा ही होगा न?
नहीं, क्यों?
तब तो तुम्हारी पूरी ज़िंदगी बेकार गई। क्योंकि अपनी नाव डूब रही है। हम तो तैरकर उस पार चले जाएँगे। आप क्या करोगे?
हर वक्त सभी लोगों की भूलें ही निकालते रहते हो। तोता की चोंच टेढ़ी, कुत्ते की दुम टेढ़ी, मेरी गर्दन टेढ़ी......
अरे, हमारा तो एक टेढ़ा, आपके तो अठारह अंग टेढ़े हैं!
नाव टूट गई। किनारा बिल्कुल नज़दीक था। लेकिन ऊँट को तो बिल्कुल भी तैरना नहीं आता था। डूबते हुए, ऊँट को समझ आई कि दूसरे की गलती निकालना भयंकर भूल है। बगुला, सियार और खरगोश जंगल में से एक मोटी डाली ढूँढकर ले आए। डाली नदी में फेंकी, ऊँट को किनारे पर खींचकर बचा लिया। उस दिन से जब भी ऊँट किसी की भूल निकालता, तो उसे ऐसा लगता जैसे वह डूब रहा हो। और तुरंत ही माफ़ी माँगकर, भूल सुधार लेता।

च लो

१

१ से १९ को इस तरह से रखो कि एक लाइन में आते हुए ३ गोले में रहे हुए अंकों को कुल मिलाने से ३० बने।

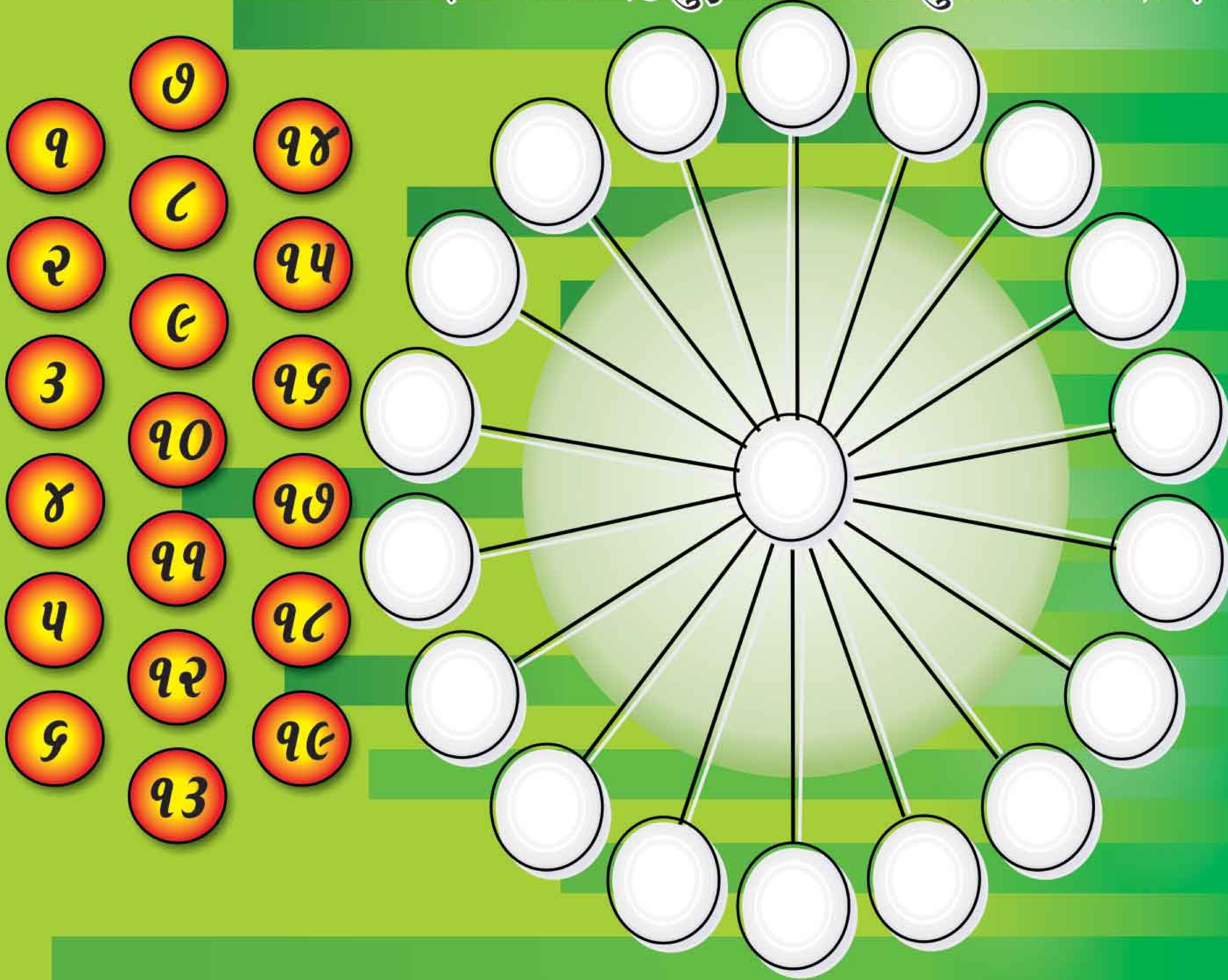

२

नीचे दिए गए चित्र में कितने आइसक्रीम है, वे ढूँढो।

३ हर एक लाइन में, तीसरी आकृति, पहले दो आकृति के आधार पर दी गई है। तो तीसरी लाइन में प्रश्न चिन्ह की जगह पर कौन-सी आकृति आएगी?

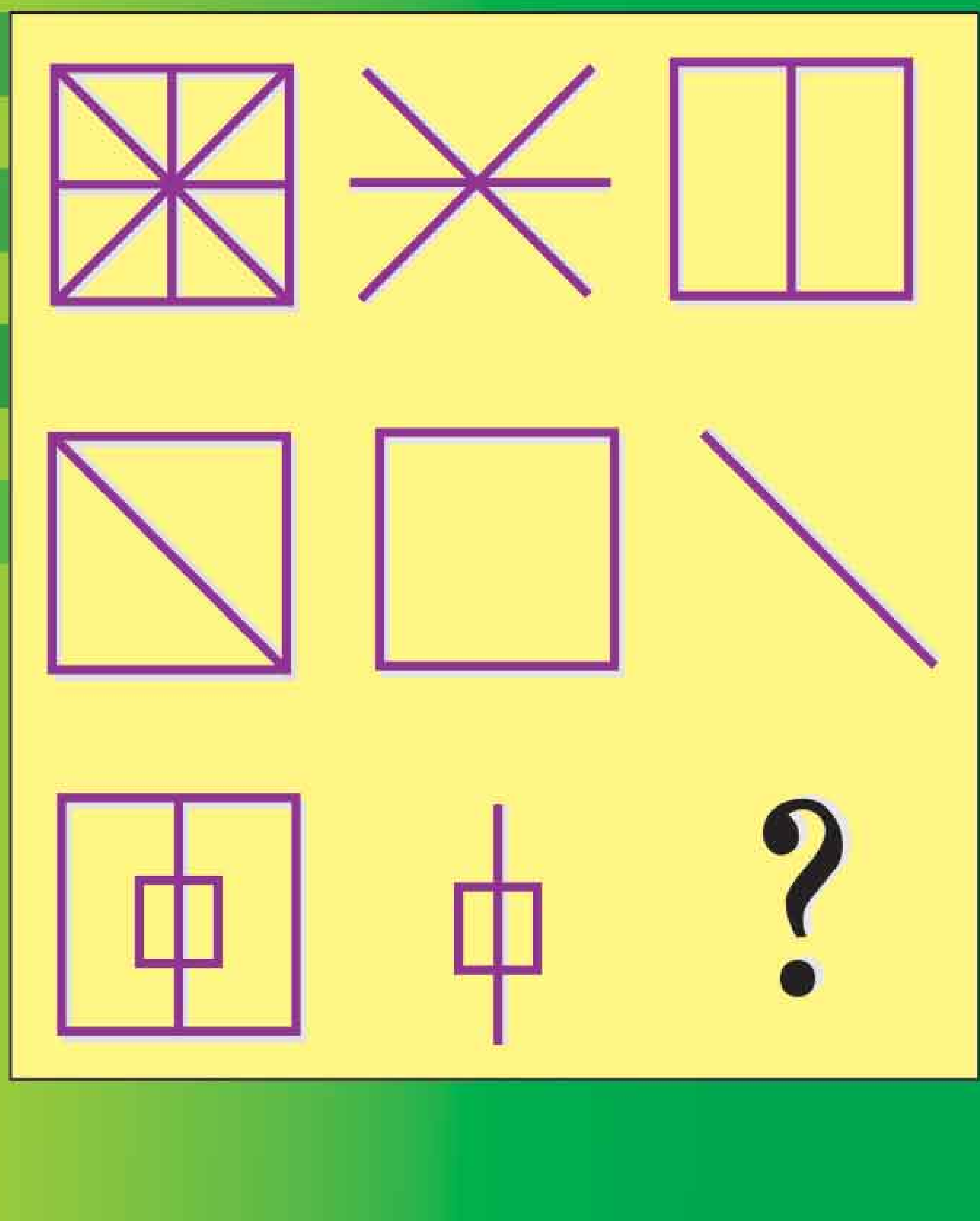

४. नीचे दिए गए चित्र में से ६ तफ़ावत ढूँढ निकालो।

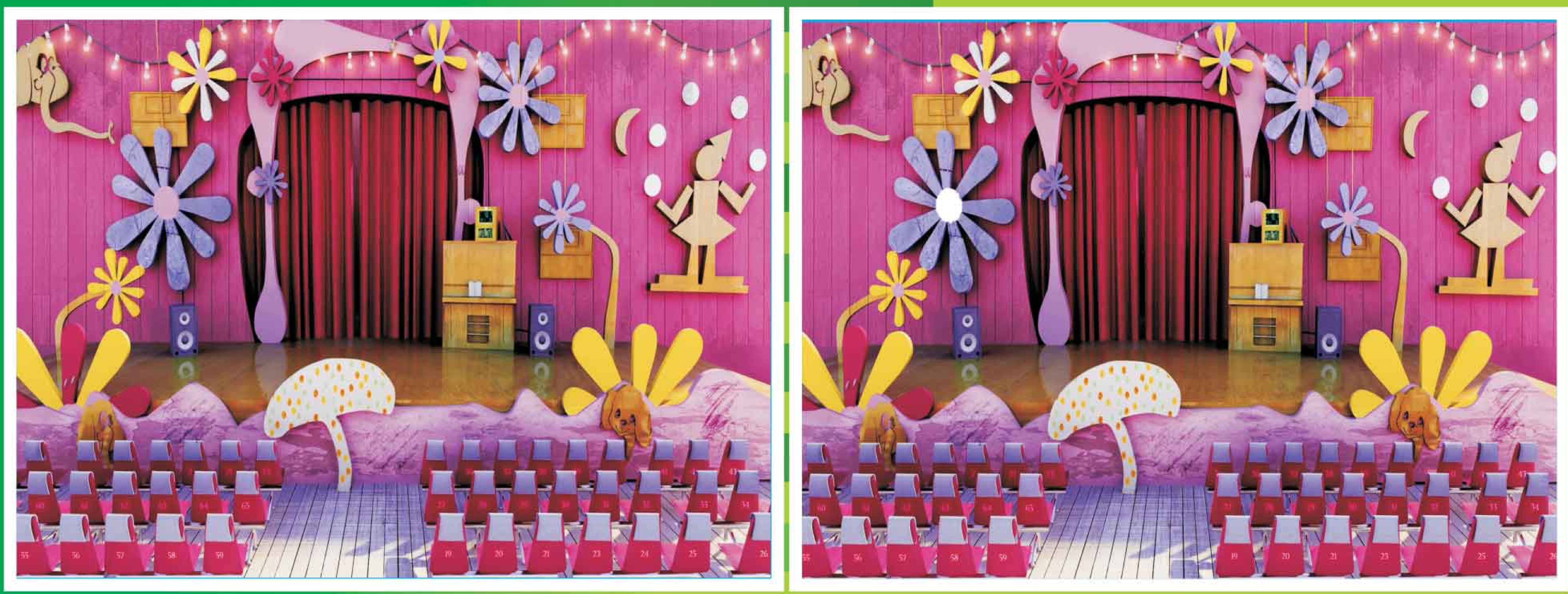

खेलें....

५. नीचे दिए गए चित्र में से असामान्य वस्तु ढूँढ निकालो।

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

चंपानगरी में जीतशत्रु नाम का राजा राज्य करता था। उनकी रानी का नाम धारिणी और पुत्र का नाम अदीनशत्रु था। वे वीतराग धर्म के परम आराधक थे। उनके प्रधान का नाम सुबुद्धि था। चंपानगरी के बाहर पूर्णभद्र यक्ष का मंदिर और सुंदर बगीचा था। नगरी के चारों ओर घाटियाँ थी। घाटी के ईशान कोने में थोड़ा पानी था, उसमें से सड़ांध की बदबू आ रही थी।

एकबार जीतशत्रु राजा, दूसरे राजाओं के साथ स्वादिष्ट भोजन लेकर, पान-सुपारी चबाते-चबाते भोजन की बहुत तारीफ़ कर रहे थे। सुबुद्धि प्रधान के अलावा अन्य सभी लोगों ने भी प्रशंसा का अनुमोदन किया। सुबुद्धि की तरफ से जब अनुमोदन नहीं मिला, तब सिर्फ उन्हें मौन देखकर राजा ने सुबुद्धि को संबोधित करके फिर से भोजन आदि की बहुत तारीफ़ की और उनका अभिप्राय पूछा।

सुबुद्धि प्रधान ने विनयपूर्वक कहा, "महाराज! उसमें तारीफ़ करने जैसा कुछ था, ऐसा मैं नहीं मानता। जड़ वस्तु का स्वभाव ऐसा है, जो आज अच्छा है, वह कल खराब हो जाता है और खराब पुद्‌गल अच्छा हो जाता है, ऐसे परिवर्तन होते ही रहता है। अतः खाने की चीज़ों के लिए क्या आश्चर्य करना?" यह बात राजा को अच्छी नहीं लगी, लेकिन वाद-विवाद न हो, इसलिए राजा ने वह बात छोड़ दी।

एक बार राजा, सुबुद्धि प्रधान और कई परिवारों के साथ गाँव के बाहर ईशान कोने की तरफ गए। वहाँ खाई के गंदे पानी की बदबू से होनेवाली परेशानी की बात करने लगे। सुबुद्धि प्रधान के अलावा दूसरे सभी लोगों ने राजा की बात का अनुमोदन किया, लेकिन सुबुद्धि प्रधान कुछ भी नहीं बोले। पहले की तरह राजा ने फिर से पूछा, प्रधान ने कहा, "अच्छे का खराब और खराब का अच्छा होना यह पुद्‌गल स्वभाव है, इसमें क्या तारीफ़ करना या क्या बुराई करना?"यह बात भी राजा को अच्छी नहीं लगी। इसलिए प्रधान ने राजा को अपनी बात का प्रत्यक्ष अनुभव करवाने का निश्चय किया।

एक रात प्रधान ने अपने खास विश्वसनीय नौकर से कुम्हार के यहाँ से नया बड़ा सा मिट्‌टी का मटका मँगवाया और उसमें खाई का दुर्गंधवाला पानी भरा। उस पानी में राख डालकर मटके का मुँह बंद करके रख दिया। इस तरह सात दिन तक सात बार यही विधि करने से पानी मीठा, रोचक,

हल्का और शरीर के लिए गुणकारी हो गया।

एक दिन प्रधान ने अपने विश्वसनीय आदमी से वह शुद्ध किया हुआ पानी, भोजन के समय राजा को पीने के लिए भेजा। पानी राजा को बहुत मीठा लगा। उन्होंने पानी लानेवाले से पूछा "यह मीठा पानी कहाँ से लाए?" जबाब में उसने कहा कि सुबुद्धि प्रधान ने भेजा है। राजा ने प्रधान को बुलाकर कहा, "हे प्रधान! तुम्हें मेरे लिए क्यों अभाव है, कि तुम हमेशा ऐसा मीठा पानी पीते हो, जब कि मेरे लिए कभी नहीं भेज़ते? यह पानी कहाँ से मँगवाते हो?"

प्रधान ने कहा, "महाराज! यह घाटी का दुर्गंधवाला पानी ही है।" राजा ने यह बात नहीं मानी।

प्रधान ने कहा, "यदि आप यह बात नहीं मान रहे हैं तो आप भी ऐसा ही करके देख सकते हैं" राजा ने प्रमाण सिद्ध करने के लिए खुद यह प्रयोग करके देखा। सुबुद्धि प्रधान की बात सही निकली।

राजा ने कहा, "प्रधान, तुम्हारी बात सही है। अच्छे में से खराब होना और खराब में से अच्छा होना, यही पुद्‌गल का स्वभाव है और यह कुदरती है। अतः किसीकी तारीफ़ करने जैसा भी नहीं है और ना ही किसीकी बुराई करने जैसा।"

देखा मित्रो, हम भी अगर यह समझें तो हमें भी कहीं पकड़ नहीं रहेगी।

" अच्छे में से खराब होना और खराब में से अच्छा होना, यही पुद्‌गल का स्वभाव है और यह कुदरती है।"

अपने आपका परीक्षण करके देखो !

जानकी, आदि, नताशा और साहिल मिलकर "दुनिया के महत्वाकांक्षी नेताओं" पर पावरपॉइंट प्रेज़ेंटेशन बना रहे थे।

प्रेज़ेंटेशन बनाते समय सबकी आपस में जो चर्चा हुई, उसका वर्णन नीचे टेबल में दिया है।

जिस दोस्त का संवाद योग्य न लगे, उसके लिए "रेड सिग्नल" करो। किस समझ से यह "रेड सिग्नल" किया है, वह लिखो। अगर तुम उसकी जगह होते तो क्या करते?

जो संवाद करने योग्य लगे, उसके लिए "ग्रीन सिग्नल" करो। किस समझ से "ग्रीन सिग्नल" किया है वह लिखो। तुम उसकी जगह होते तो क्या करते?

जवाब टेबल में लिखो।

इस अंक से मिली हुई समझ के कुछ मुद्दे नीचे दिए गए हैं। योग्य नंबर खोजकर टेबल में लिखो।

१. जो भूलें सामनेवाले को खुद को मालूम हों, ऐसी भूलें कभी भी नहीं निकालनी चाहिए।

२. भूल स्वीकार करने से बड़े मन के बन सकते हैं।

३. यदि हमारे भूल निकालने पर सामनेवाला उपकार माने, तभी भूल निकालनी चाहिए।

४. भूल निकालने से सामनेवाले को दुःख होगा ही, यह तो उसका अपमान करने जैसा है।

सीन-१

नताशा : हम पावरपॉइंट स्लाइड के बैक ग्राउन्ड का कलर ग्रीन रखेंगे।

जानकी : ग्रीन?! तेरी चोइस कितनी गंदी है! स्लाइड में ग्रीन कलर कितना गंदा दिखेगा!

सीन-२

साहिल ने थोड़े सुंदर वाक्य ढूँढकर रखे थे। आदि ने वे वाक्य स्लाइड में टाइप किए। अचानक कम्प्यूटर बंद हो गया।

साहिल : आदि, तूने सेव किया था न?

आदि : नहीं, भूल हो गई। आई एम सॉरी। मैं सेव करने ही वाला था, तब तक तो ......

साहिल : ओह नो!........ आदि, तू कितना लापरवाह है!..... इतना भी नहीं मालूम कि बार-बार सेव करते रहना चाहिए? अब मैं टाइप करूँगा।

सीन ३

साहिल फॉन्ट साइज़ बढ़ाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उससे वह नहीं हो रहा था।

आदि : साहिल, मुझे मालूम है कि फॉन्ट साइज़ कैसे बढ़ाते हैं, बताऊँ?

साहिल : हाँ, बता न! मेरी कहाँ मिस्टेक हो रही है? आदि ने साहिल को उसकी भूल दिखाई और सही तरीका बताया।

जवाब:

सीन १ - जानकी (रेड, समझ नं.४)

सीन २ - आदि (ग्रीन, समझ नं.२) साहिल (रेड, समझ नं.१,४)

सीन ३ - आदि (ग्रीन समझ नं.३)

मीठी यादें

"जिनके इतने अधिक उपकार हों, उनका एक भी दोष कैसे देख सकते हैं? यह तो विनय चूकना कहलाएगा।"

नीरू माँ को ऐसा बहुत रहता था कि अपने से जो सीनियर (बड़े) हों उनका हमेशा विनय रखना चाहिए। उनकी भूल हो फिर भी उनका विनय रखना चाहिए।

एक दिन नीरू माँ, एक सीनियर ब्रह्मचारी भाई और एक ब्रह्मचारी बहन बैठे थे। सहज बातें चल रहीं थीं। बात-बात में बहन बोलीं, "इन भाई की हाज़री में तो मैं ऐसा करूँगी हीं नहीं। नहीं तो वे मुझे टोके बिना रहेंगे ही नहीं। वे जाएँगे तभी बात करूँगी।"

उस समय तो नीरू माँ कुछ नहीं बोलीं। उल्टा उन्होंने भी उन भाई के साथ थोड़ा मज़ाक किया। दोनों को हँसाकर बात पूरी की।

दूसरे दिन नीरू माँ अकेली थीं। तब उस बहन को बुलाया और समझाते हुए कहा कि "इन भाई ने तुम्हारी कितनी मदद की है। ऐसा कहकर उन्होंने पहले की सारी घटनाएँ याद दिलाई और कहा, "जिनके इतने अधिक उपकार हों, उनका एक भी दोष कैसे देख सकते हैं? यह तो विनय चूकना कहलाएगा।"

बहन को अपनी भूल समझ में आई। नीरू माँ ने उन्हें आगे समझाते हुए कहा, "अपनी बुद्धि कितनी संकुचित है कि आपको अपना ही दिखता है। अपने में से थोड़ा भी कम हुआ कि, तुरंत ही सामनेवाले पर टूट पड़ते हैं। फिर यह भी नहीं देखते कि सामने कौन है! ऐसी बुद्धि ज्ञान में प्रगति नहीं करने देगी।"

नीरू माँ ने इतने प्रेम से उस बहन को समझाया कि उनका गला ही भर आया। उस दिन से उन्हें हमेशा ध्यान रहता है कि जिसका उपकार हो उनके दोष तो देखने ही नहीं चाहिए।

देखा मित्रो, ज्ञानी कितने प्रेम से सबको समझाते हैं!

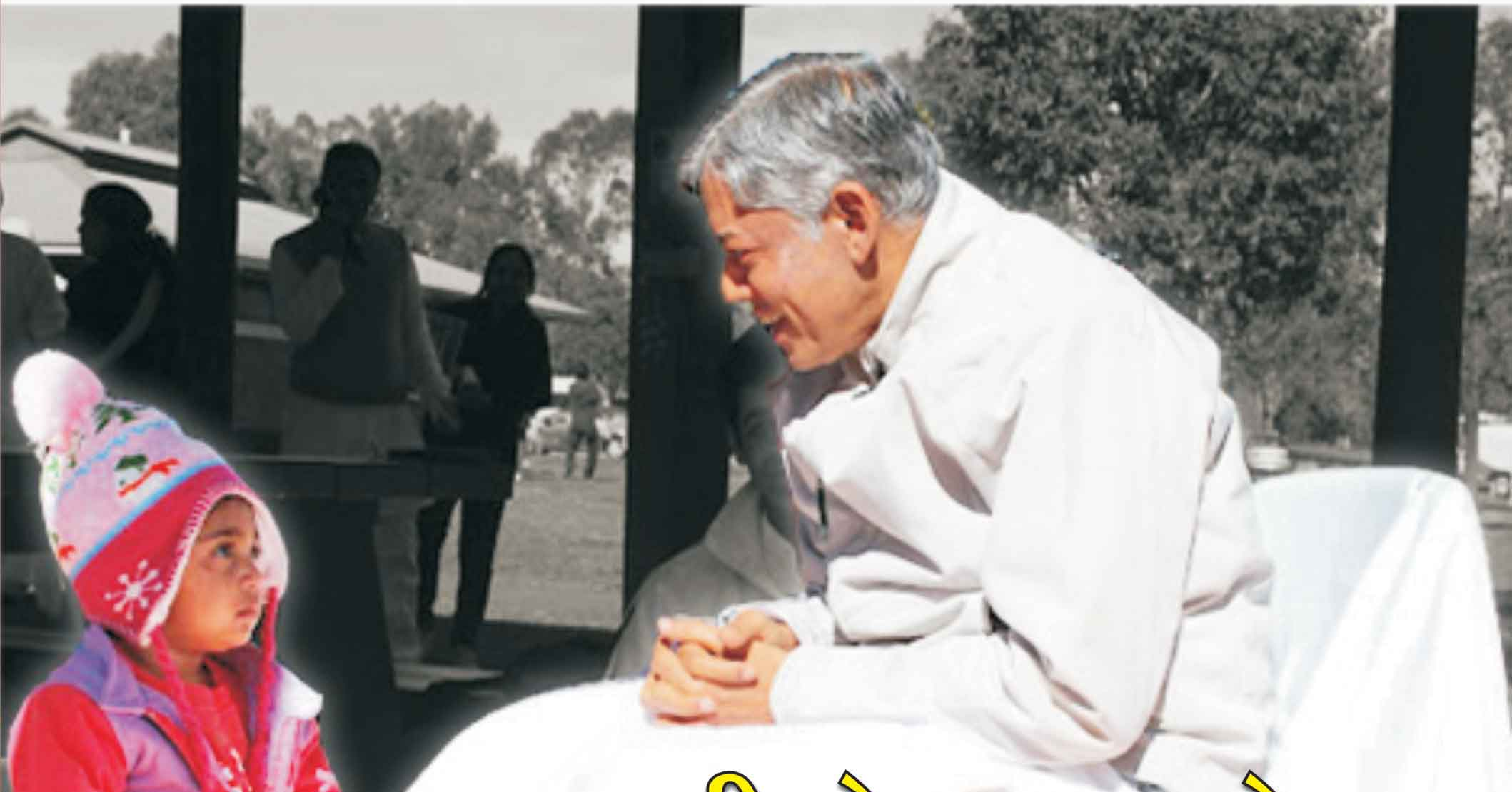

पूज्यश्री के साथ बच्चे

प्रश्नकर्ता : मुझे मेरे दोस्त के साथ छोटी-छोटी बात पर झगड़ा हो जाता है और अंदर क्रोध हो जाता है तो तब मुझे क्या करना चाहिए?

दीपकभाई : प्रतिक्रमण करना और यह छोटी बात को छोटी ही रखना। बड़ी क्यों होने दें? तुम कहना "कोई बात नहीं, तू मेरे पर गुस्सा हुआ लेकिन कोई बात नहीं। हम दोनों दोस्त ही है।" क्रोध को सँभालना चाहिए या दोस्त को सँभालना चाहिए? क्या करोगे? क्रोध को कहना कि, तू जा बाप! मुझे दोस्ती तोड़नी नहीं है और छोटी बात में एडजस्ट हो जाना। दादा भगवान सिखाते हैं न टकराव टालो, एडजस्ट एवरीव्हेर।

प्रश्नकर्ता : ऐसा रखता तो हूँ लेकिन बार-बार हो जाता है।

दीपकभाई : हाँ, रात को बैठकर माफी माँगना कि, "हे दादा भगवान, मुझे दोस्ती तोड़नी नहीं है मुझे माफ करो और मुझसे क्रोध हो गया उसकी माफी माँगता हूँ।" धीरे-धीरे कम हो जाएगा। और खुद की भूल देखना। वह तो थोड़ा खेलता होगा तेरे साथ, वह थोड़े ही परेशान करता होगा? दोस्त तो खेलते हैं न एक दूसरे के साथ? और कुछ बोलें तो हमें उसकी असर नहीं होने देनी है। हमें समझना है कि दोस्त है हमारा। दोस्त के साथ दोस्ती कब टिकेगी? हम उसे क्रोध से दुःख देंगे तो वह हमारे साथ दोस्ती रखेगा? वह तो कहेगा कि यह तो बहुत गुस्सावाला है, छोड़ो उसको और जो शांत हो उससे दोस्ती करेगा। फिर हमारे दोस्त कम हो जाएँगे न? ऐसा गुस्सा करके दुःख देंगे तो दोस्ती बढ़ती है या कम होती है? तो तुझे दोस्ती बढ़ानी है या कम करनी है?

प्रश्नकर्ता : बढ़ानी है।

दीपकभाई : हाँ, टिकाओ तो भी बहुत हो गया, बढ़े नहीं तो कुछ नहीं। यानी हमें समझना है कि यह क्रोध हमारा दुश्मन है और किसीको दुःख देकर हमारी मित्राचारी टिकती नहीं। इसलिए तय करना और रोज़ दस मिनिट याद करना कि मैंने क्रोध करके कौन-से दोस्त को दुःख दिया, दादा भगवान की साक्षी में माफी माँगता हूँ और फिर से ऐसी भूल करूँ नहीं इसके लिए मुझे शक्ति दीजिए। और सुबह उठकर निश्चय करना कि मेरे मन से, वाणी से और वर्तन से किसीको दुःख नहीं देना है। क्रोध से किसी को दुःख नहीं दूँ, हे दादा भगवान मुझे शक्ति दीजिए। निश्चय करना, फर्क पड़ेगा।

पहेलियों के जवाब

१)

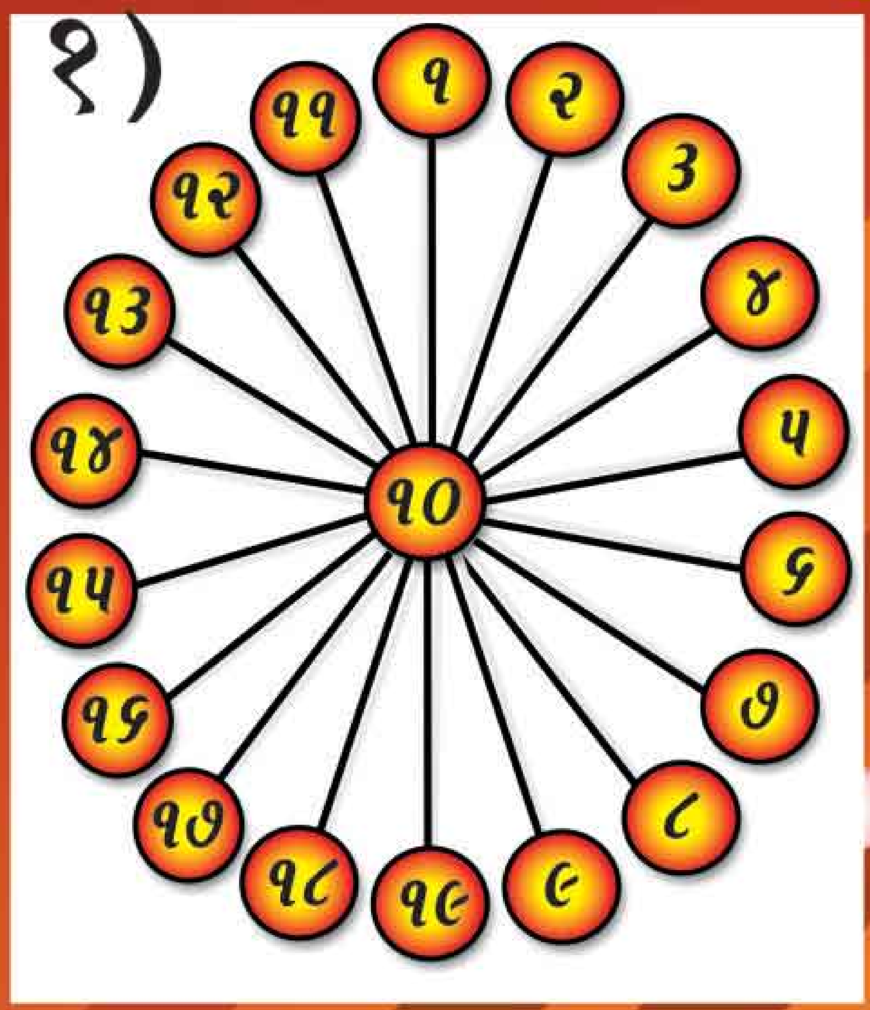

२) नौ

३)

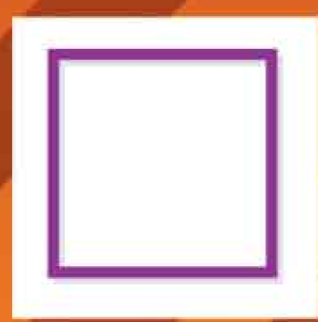

४)

५) १) चटाई
२) साईकल
३) आँख
४) टूथब्रश

प्रश्न : शनिचर को आप मूर्ख आदमी को कैसे हँसा सकते हो?
जवाब : बुधवार को जोक्स कहकर।

शिक्षक : पुराने से पुराना प्राणी कौन-सा है?
टप्पु : जेबरा ।
शिक्षक : कैसे?
टप्पु : क्योंकि वह "ब्लेक एन्ड व्हाइट" है।

हा....... हा....... ही....... ही.......

एक भूलक्कड़ रास्ते में खड़ा रहकर अपना लंच बॉक्स खोलकर देख रहा था।
- क्यों?
यह देखने के लिए कि मैं ऑफिस जा रहा हूँ या ऑफिस से वापस लौट रहा हूँ।

डॉक्टर : तुम्हें पता है कि सिगरेट वह धीमा ज़हर है?
दर्दी : तो मुझे कहाँ जल्दी मरना है?

Akram Express

November 2012
Year : 1, Issue : 7
Conti. Issue No.: 7

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

दादा का जन्म दिन

आयो आयो रे ....

आनंद लायो रे.........

दादा का जन्म दिन........

बालमित्रो,

भावनगर में ता. २३-२७ नवम्बर २०१२ दरमियान परम पूज्य दादाश्री का १०५ वाँ जन्म जयंति महोत्सव मनाया जाएगा। जिसमें तुम्हारे लिए खास आकर्षण है तुम्हारा मनभावन चिल्ड्रन पार्क! जिसमें है हेन्ड्स ऑन (खुद बनाओ और सीखो), मल्टीमिडिया शो और पपेट शो।

तो आप सभी अपने मम्मी-पापा के साथ ज़रूर यह चिल्ड्रन पार्क देखने आना। हाँ देखो! तुम्हारे मित्रों को साथ में लाना भूलना मत!

स्थान : जवाहर मैदान, वाघावाडी रोड, रिलायन्स मॉल के सामने, भावनगर फोन नं : ९९२४३४४४२५

समयः ५ से १०

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.